हंसता हुआ धर्म

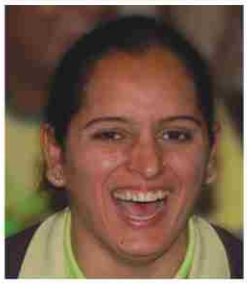

मुल्ला नसरुद्दीन एक महिला को प्रेम करता था। उस महिला ने कहा कि ऐसा करो, मेरे पति को पता न चले, मैं दूसरी मंजिल पर रहती हूं, रस्सी लटका दूंगी और ऊपर से अठन्नी गिरा दूंगी। खन्न से आवाज होगी नीचे, तुम समझ जाना इशारा कि बस अब रस्सी पर चढ़ आना है। अर्थात् पतिदेव सो गए हैं और खर्राटे ले रहे हैं। मुल्ला ने कहा, ठीक।

पूर्णिमा की रात, खड़ा हो गया खिड़की के नीचे। आधी रात रस्सी लटकी, अठन्नी गिरी, खन्न से आवाज हुई। महिला राह देखते-देखते थक गई। जब एक घंटा हो गया, उसने नीचे झांक कर कहा कि नसरुद्दीन, अठन्नी की आवाज सुनाई नहीं पड़ी?

नसरुद्दीन ने कहा, सुनाई पड़ी, उसी को तो खोज रहा हूं। मिल जाए तो ऊपर आऊं।

दुबले-पतले चंदूलाल तर्कशास्त्र के अध्यापक थे। फिर चुनाव लड़े। और भाग्य की बात कि जीत भी गए। कुछ पत्रकार इंटरव्यू लेने आए हुए थे। बैठकखाने में गपशप चल रही थी कि तभी श्रीमती चंदूलाल ने वहां प्रवेश किया। एक प्रश्नकर्ता ने पूछा कि क्या यही आपकी अर्धांगिनी हैं? चंदूलाल ने कहा नहीं। कुछ देर बाद एक पत्रकार ने कहा, कितना अच्छा होता यदि हमें आपकी श्रीमती जी का इंटरव्यू भी लेने का सौभाग्य मिल जाता। चंदूलाल बोले, अवश्य-अवश्य, ये बैठी हैं हमारी धर्मपत्नी, आप जो भी पूछना चाहते हैं पूछ सकते हैं इनसे।

पत्रकारों ने आश्चर्य से कहा कि अभी तो आपने कहा कि ये आपकी अर्धांगिनी नहीं और अभी आप इन्हें अपनी धर्मपत्नी बता रहे हैं! ये कैसा विरोधाभास है?

चंदूलाल ने जवाब दिया, विरोधाभास कहां है भाई! आप लोगों को क्या मेरी पत्नी का भीमकाय शरीर दिखाई नहीं देता जो ऐसे प्रश्न पूछते हैं? हे सज्जनों, वे मेरी अर्धांगिनी नहीं हैं, मैं ही उनका अर्धांग हूं। और सच पूछो तो अर्धांग नहीं मात्र अष्टांग हूं।

एक आदमी एक मनोवैज्ञानिक के पास गया। उसकी मुसीबत यह थी कि उसे हर चीज दो दिखाई पड़ती थी। उसे इसके कारण बहुत परेशानी होने लगी थी। पत्नी भी पूछती थी कि आखिर बात क्या है? तुम्हारा चलना, उठना, बैठना सब कुछ बेढंगा क्यों हो गया है?

आखिर एक दिन उसने पत्नी से कहा कि अब तुम मानती नहीं, तो मैं बताए देता हूं-मुझे हर चीज दो दिखाई पड़ने लगी है। मुझे तुम भी दो दिखाई पड़ने लगी हो। तो पत्नी ने कहा, फिर ठीक है, एक को तुम रखो और मैं चली तुम्हारे मित्र के साथ। तो वह और परेशान हो गया और बोला, कि तुम मत जाओ, मैं जा रहा हूं चिकित्सक के पास और अपना इलाज पूछ कर आता हूं।

तो वह एक मनोवैज्ञानिक के पास गया। उसने जाकर मनोवैज्ञानिक को कहा कि मैं बड़ी मुश्किल में हूं और मामला अब जरा झंझट का है। मेरी पत्नी भी मुझे छोड़ने की धमकी दे चुकी है। अब कुछ करना ही होगा। मनोवैज्ञानिक ने कहा कि तुम्हारी समस्या क्या है? उसने कहा मुझे हर चीज दो दिखाई पड़ती है। मैं इसके कारण बहुत परेशानी उठा चुका हूं।

मनोवैज्ञानिक ने उसकी तरफ देखा। फिर पूरे कमरे पर एक नज़र डाली, और पूछा कि क्या तुम चारों को ही दो दिखाई पड़ते हैं?

मुल्ला नसरुद्दीन के दांत में बहुत पीड़ा थी, लेकिन दांत निकलवाने में नसरुद्दीन को बड़ा डर लगता था। दांत के डाक्टर ने उसे बहुत तरह से समझाया कि नसरुद्दीन, दर्द बिलकुल नहीं होगा। बस दो मिनट की बात है। लेकिन नसरुद्दीन बड़ा घबराए। आखिर नसरुद्दीन जब तैयार न हुआ तो डाक्टर थोड़ी सी व्हिस्की लेकर आया और मुल्ला को देते हुए बोला, लो नसरुद्दीन, शायद इसे पीकर तुम्हें थोड़ी हिम्मत आए।

व्हिस्की पीने के दो-चार मिनट बाद तो नसरुद्दीन एकदम खड़ा हो गया और गरज कर बोला, अब आई साली हिम्मत। अब जरा कोई हाथ तो लगा कर देखे मेरे दांत को। अरे हाथ-पैर तोड़ दूंगा जिसने जरा सा भी छुआ मेरे दांत को।

मुल्ला नसरुद्दीन एक बार अपना हाथ दिखाने एक ज्योतिषी के पास गया। चवन्नी छाप ज्योतिषी। उस ज्योतिषी ने कहा कि बेटा, खुश हो जा! बड़ी ससुराल मिलने वाली है। धन वाली ससुराल। एकमात्र बेटी है। उसके साथ ही बहुत धन भी दहेज में मिलने वाला है।

मुल्ला ने कहा, गजब कर दिया! यह लो और चवन्नी, मगर एक बात और बताओ कि मेरी पत्नी और तीन बच्चों का क्या होगा?

चंदूलाल को एक दिन देखकर नसरुद्दीन ने पूछा कि क्या बात है भाई, यह रोनी सूरत क्यों बना रखी है?

चंदूलाल बिलकुल रो देने वाले अंदाज में बोला, क्या बताऊं दोस्त, मेरी पत्नी ने मेरा सब कुछ ले लिया और मुझे तलाक दे दिया। नसरुद्दीन बोला, अरे किस्मत वाले हो चंदूलाल, मेरी बीबी ने तो मेरा सब कुछ ले भी लिया और मुझे तलाक भी नहीं दिया।